हिंदी साहित्य में 'स्त्री विमर्श'

गंगा शिवाजी यरोळकर शोध छात्रा, हिंदी विभागशिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर महाराष्ट्र

ganga.yarolkar@gmail.com

सारांश

हिंदी साहित्य ज्ञान का वह सूर्य है, जो अनेक विधाओं के माध्यम से हमें समस्त मानव समाज की भावनाओं को परिष्कृत करने का अनमोल कार्य करता है। 'स्त्री विमर्श' हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण रूप है जो समाज में व्याप्त स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक, राजनीतिक स्थिति, उनकी स्वतंत्रता, उनके अधिकार तथा उनके संघर्षों को प्रस्तुत कर स्त्रियों के अस्तित्व पर विचार विमर्श करने के लिए कुछ दृष्टिकोण छोड देता है।

हिंदी साहित्य में 'स्त्री विमर्श' सिर्फ साहित्यिक चर्चा का विषय नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। और इसी माध्यम के जरिए हिंदी के अनेक साहित्यकारों ने स्त्री विमर्श पर अपने विचार प्रस्तुत किए है। उनमें उल्लेखनीय नाम - मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला सिन्हा, मृणाल पाण्डे, चित्रा मुद्गल, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला गर्ग, सुशीला टाकभौरे, जया जादवानी, अल्का सरावगी, मेहरुन्निसा परवेज आदि अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी द्वारा स्त्रियों के प्रश्नों को, उनके अनुभवों को, पीडाओं तथा संघर्षों को प्रस्तुत कर महिलाओं के अधिकारों के साथ-साथ समतामूलक समाज की संरचना का मार्ग भी उजागर करने का प्रयास किया है, इसीलिए कहना सही होगा कि, समकालीन हिंदी साहित्य स्त्रियों के अस्तित्व, स्त्रीयों की पहचान, उनके अधिकार, उनकी सामाजिक भूमिका को अधिक प्रभावशाली तथा सशक्त रूप में अभिव्यक्त करके अपना एक अलग महत्त्व सिद्ध करता है।

बीज शब्द - स्त्री विमर्श, संघर्ष, अस्मिता, चेतना, सामाजिक परिवर्तन

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की परंपरा विशाल और समृद्ध रही है, जिसमें अनेक वर्षो से ज्ञान, दर्शन, संस्कृति, विज्ञान तथा अनेक ग्रंथों के रूप में अभिव्यक्त होते होते साहित्य के विभिन्न आयामों में विकसित होती नजर आती है । हिंदी साहित्य ज्ञान का वह सूर्य है, जो अनेक विधाओं के माध्यम से हमें समस्त मानव समाज की भावनाओं को परिष्कृत करने का अनमोल कार्य तो करता ही है, साथ ही साथ समाज में हो रहे सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक बदलावों को भी प्रतिबिंबित करता है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के हिंदी साहित्य में अनेक विमर्शो पर चर्चा, विचार और लेखन भी हुआ है। उसमें दलित विमर्श, अल्पसंख्यांक विमर्श, आदिवासी विमर्श, पर्यावरण विमर्श, बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श, विकलांग विमर्श आदि उसी प्रकार स्त्री विमर्श भी हिंदी साहित्य में प्रमुख रहा है। ये सभी विमर्श मानव समाज को योग्य सोच - विचार और दिशा दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

'स्त्री विमर्श' हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण रूप है जो समाज में व्याप्त स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक, राजनीतिक स्थिति, उनकी स्वतंत्रता उनके अधिकार तथा उनके संघर्षों को प्रस्तुत करता है। साथ ही साथ स्त्रियों के अस्तित्व पर विचार विमर्श करने के लिए कुछ दृष्टिकोण भी छोड देता है। इसीलिए कहना महत्वपूर्ण लगता है कि, स्त्री विमर्श सिर्फ साहित्य तक सीमित नहीं बल्कि समाज में महत्वपूर्ण बदलाव तथा परिवर्तन लाने में अपना एक अलग अस्तित्व सिद्ध करता है।

स्त्री विमर्श- स्वरूप

स्त्री विमर्श दो शब्दों से मिलकर बना है। स्त्री और विमर्श। स्त्री का अर्थ है - महिला, नारी, औरत, लड़की अर्थात लिंग के आधार पर स्त्री होना। और विमर्श का शाब्दिक अर्थ - बहस या सार्वजनिक चर्चा।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार, विमर्श का अर्थ- "तबादला-ए- ख्याल, परामर्श, मशविरा, राय-बात, विचार-विनिमय, विचार-विमर्श, सोच-विचार ।"[१]

मानक हिंदी कोश में विमर्श का अर्थ - "सोच-विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, किसी बात या विषय पर कुछ सोचना - लिखना, गुण-दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना जाँचना और परखना। किसी से परामर्श या सलाह करना।"[२]

इससे स्पष्ट होता है कि, किसी विषय के बारे में गंभीरता से चिंतन, मनन, विवेचन, विचार-विनिमय तथा सोच विचार करना ही विमर्श है। इसी तरह ' स्त्री विमर्श' यानी स्त्री को समग्रता के साथ जानने, समझने और उसे बेहतर बनाने की पडताल है। स्त्री विमर्श समाज में व्याप्त एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक मद्दों के साथ- साथ

स्त्रियों के आधिकार, उनकी स्वतंत्रता, उनका अस्तित्व तथा समाज में व्याप्त उनकी पहचान को लेकर होनेवाली चर्चाओं और उनके संघर्षों पर केंद्रित है।

प्रभा खेतान 'स्त्री विमर्श' के बारे में कहती है, "नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूँजीवाद है। स्त्री हर जगह है, हर वाद में है, फैलाव में है, मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण की इस पारंपारिक प्रक्रिया को पुरुष दृष्टि से नहीं बल्कि स्त्री दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।"[३]

क्षमा शर्मा स्त्री विमर्श पर अपने विचार रखते हुए कहती है- "स्त्री विमर्श स्त्री की अस्मिता के साथ ही उसमें चेतना का, अन्याय के विरोध का, अस्तित्व बोध का और उसके अत्याचार के विरोध में खडे रहने की लड़ाकु वृत्ति का न केवल परिचय देता है अपितु स्त्री चिंतन को बल प्रदान करता है। वर्तमान नारी आर्थिक रूप से स्वयं पूर्ण बनती जा रही है। आत्मगौरव, अस्तित्व, चेतना, आत्मनिर्भरता ने नारी को आत्मविश्वासी व सशक्त बना दिया है।"[४] स्त्री विमर्श पर अपने विचार रखते हुए महादेवी वर्मा जी कहती है, हमें न किसी पर जय चाहिए ना किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुत्व चाहिए, न किसी पर प्रभुता। केवल अपना वह स्थान, वह स्वरूप चाहिये जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बना सकेंगी।

इससे यह प्रतित होता है कि, समाज के विकास में पुरुष और स्त्री दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। और इसे संपूर्ण मानव समाज को पहचानकर स्त्री को अपने अधिकार तथा सभी जगह पुरुषों के समान जो अधिकार स्त्री चाहती है वह उसे देना चाहिए।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श बीसवी सदी के अंतिम दो दशकों में उभरकर सामने आया है। ऐसा कहना इसीलिए सही लगता है क्योंकि तब से ही स्त्रियों के प्रश्नों पर विश्व में समाज - सुधारकों, विद्वानों और राजनीतिज्ञों में चर्चा शुरू हुई नजर आती है। अनेक वर्षों से हो रहे स्त्री के शोषण तथा दमन के प्रति स्त्री - चेतना ने ही स्त्री-विमर्श का रूप लिया है।

आज के इस आधुनिक युग में भले ही स्त्रियों को घर से देने बाहर निकलने का अवसर मिल गया है, पर उसकी वेदना, उसकी चिंता, उसका शोषण, दमन और उत्पीड़न कहीं भी कम होते हुए नजर नहीं आता। यहीं सब बाते 'स्त्री विमर्श' का रूप लेकर साहित्य में विविध विधाओं के जरिए प्रखरता से सामने आती है। हिंदी साहित्य भी स्त्री लेखन अपनी सहज वाणी में किसी की परवाह न करते हुए, अपने आज तक सहे हुए दर्द-वेदना, निराशा, उपेक्षा, भय, पारिवारिक समस्या, विडंबना, व्यथाओं को व्यक्त कर रहा है। इसे हम क्रांतिकारी बदलाव भी कह सकते है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श सिर्फ साहित्यिक चर्चा का विषय नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसीलिए ऐसा कहना सही होगा कि, स्त्री विमर्श महिलाओं के अधिकारों के साथ - साथ समतामूलक समाज की संरचना का मार्ग भी उजागर करता है। यह सब बाते साहित्य के द्वारा ही समाज तक पहुंचती है। इसीलिए तो साहित्य को समाज का दर्पण कहते है।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का चित्रण अनेक साहित्यकारों ने किया है। उनमें उल्लेखनीय है - मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला सिन्हा, मृणाल पांडे, चित्रा मुद्गल, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला गर्ग, जयशंकर प्रसाद, सुशीला टाकभौरे, जया जादवानी, अल्का सरावगी, मेहरुन्निसा परवेज आदि ऐसे अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी द्वारा स्त्रियों के प्रश्नों तथा उनके अनुभवों, पीड़ाओं और संघर्षों को प्रस्तुत किया है।

मेहरुन्निसा परवेज जी ने नारी समस्याओं को अपनी लेखनी द्वारा उजागर करने का प्रयास किया है। उन्होंने स्त्रियों का सामाजिक शोषण, दहेज प्रथा, आर्थिक परतन्त्रता, परदा प्रथा, वेश्यावृत्ति, बाल-विवाह, स्त्रीयों का मानसिक शोषण, लैगिंक शोषण, आदि अनेक समस्याओं को चित्रित किया है। 'अपने अपने दायरे' कहानी स्वच्छंदी व्यवहार और स्त्री के घुटन की व्यथा है। प्रस्तुत कहानी में नारी की असहाय स्थिति का चित्रण किया है। उनके ही शब्दों में, "पति कितना भी अत्याचार करें, उसे केवल उसके आश्रय में ही पड़े रहना होता है, क्योंकि पत्नी आर्थिक रूप से पति के उपरही निर्भर रहती है। गृहस्वामिनी, अर्धांगिनी समझी जानेवाली नारी का अपने घर पर कोई अधिकार नहीं रहता, है, यहाँ तक कि उसे अपनी बेटी के लिए यदि कुछ भेंट देनी हो, तो वह भी चोरी छिपे देनी पडती है।"[५] मेहरुन्निसा परवेज ने अपने कहानियों में नारी जीवन के अनेक पहलुओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। 'जमाना बदल गया' , 'अपनी जमीन' इन कहानियों में उन्होंने समाज में बेटे को प्रधानता दी जाती है और बेटियों को हीन दृष्टि से देखते हैं इसका चित्रण किया है।

मैत्रेयी पुष्पा जी का साहित्य स्त्री विमर्श पर केंद्रित है। उनके कहानी संग्रह 'चिन्हार' में नारी जीवन के यथार्थ का चित्रण किया है। उसमें स्त्रियों का संघर्षशील जीवन, शहरी जीवन का प्रभाव, रिश्तों में बढ़ता हुआ दिखावा, सामाजिक

विसंगतियाँ आदि को परिष्कृत किया है। उन्होंने अपनी 'तुम किसकी हो बिन्नी' कहानी में अपने मम्मी - पापा के विलगाव के कारण बिन्नी का जीवन किस प्रकार विभाजित होता है इसका चित्रण किया है। - "बेटा गोपाल, बिन्नी तेरी बेटी है, तेरों हक है पुरों। पर मैने यहाँ आके स्कूल में दाखिल कर गई। बड़ी होशियार है! अव्वल आई है छिमाई में। इसकी साल बरबाद हो जाएगी बेटा! अब इसे मेरी रहन दे...। सो जा तू! सवेरे जानों हैं तोय।"[६]

मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'विजन' उपन्यास में शिक्षित नारियों के संघर्ष को उद्घाटित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में डॉ. नेहा और डॉ. आभा इन आधुनिक शिक्षा प्राप्त लड़कियों के द्वंद्व को उजागर किया गया है। इन दोनों लड़कियों को पुरुष डॉक्टर स्नेह और प्यार दिखाकर तथा कभी - कभी षडयंत्र में फंसाकर उनका कैरियर तबाह करने का प्रयास करते हैं। यहाँ पर डॉ. नेहा होनेवाले अन्याय अत्याचार पर विरोध तथा संघर्ष करती है पर असफल होती है। और डॉ. आभा अन्याय अत्याचार का विरोध करके स्वतंत्र व्यक्तित्व के निर्माण के लिए स्वयं कुछ निश्चित मार्ग अपनाकर अपने जीवन को सुखमय बनाती है।

इससे स्पष्ट होता है कि, मैत्रेयी पुष्पा जी का साहित्य नारी जीवन के विविध पक्षों को उजागर करता है। उनके साहित्य में स्त्री अधिकारों के प्रति एक सजगता देखने को मिलती है। उनके विचारों का खुलापन यहाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

निर्मला पुत्तुल जी ने आदिवासी महिलाओं पर होनेवाले अत्याचार और शोषण का चित्रण अपनी कविताओं में किया है। आदिवासी समाज में मातृसत्ताक पद्धति होते हुए भी वह अपना 'हक' नहीं जता सकती। और जब वह ऐसा करती है तो उसे 'डायन' कहकर करार दिया जाता है। निर्मला पुत्तुल के शब्दों में -

"हक की बात ना करो मेरी बहन
मत माँगो पिता की सम्पत्ति में अधिकार
भारी पंचायत में डायन करार कर दंडित की जाओगी
मांझी हाडाम 'पराणिक' गुड़ित ठेकेदार महाजन और
ज्ञान गुरुओं के षडयंत्र का शिकार बन
भरी पंचायत में नचा न दी जाओ नंगी
फकलू मरांडी की तरह।"[७]

भीष्म साहनी ने 'पिकनिक' कहानी के माध्यम से उच्चवर्गीय मानसिकता को चित्रित किया है । प्रस्तुत कहानी में गौरी नाम की नौकरानी है जिसका कोई घर नहीं है। वह अपने बच्चों को कोठियों के सामने सुलाती है। पर इन बातों को उच्चवर्गीय स्त्रियाँ नापसन्द करती है। वकील की पत्नी तो उसे मना करती हुई कहती है, " कैसे पड़े रहने दूं ? दिन भर इसके बच्चे यहाँ गन्द डालेंगे। दोपहर को थोडा सोने का मन होता है, इधर इसके बच्चे उद्यम मचायेंगे। इन्हें एक बार ढील दे दी तो ये टलते नहीं। मैं तो इन्हें यहाँ नहीं बैठने दूँगी।"[८] इस प्रकार भीष्म साहनी जी ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से उच्चवर्गीय स्त्रियों की मानसिकता किस प्रकार मानवीय गुणों के अभाव में बदलती रहती है, इसका वास्तव चित्रण किया है। अनेक महिला कहानीकारों ने पारिवारिक विघटन से सम्बन्धित विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण किया है। कृष्णा अग्निहोत्री ने 'खत जो गुमनाम थे' कहानी में सम्बन्ध विच्छेद की समस्या चित्रित की है, मृदुला गर्ग ने 'वितृष्णा' में भावनाओं के विघटन को चित्रित किया है। आमना अबुलहसन ने 'सरगोशी' कहानी में एकाकीपन की पीडा को चित्रित किया है।

सुशीला टाकभौरे ने अपनी 'विद्रोहणी' कविता में स्त्री जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत किया है।

"मां-बाप ने पैदा किया था गूंगा
परिवेश ने लंगडा बना दिया
चलती रही परिपाटी पर
बैसाखियां चरमराती है।
अधिक बोझ से अकुलाकर
विस्कारित मन हुंकारता है
बैसाखियों को तोड़ दूं।"[९]

राजी सेठ जी ने 'स्त्री' कहानी द्वारा ग्रामीण स्त्री की संवेदना को चित्रित किया है। गाँव के लोग अशिक्षा और अज्ञान के कारण अंधविश्वासी बन जाते है । इस बात का जिक्र कर गांव में रहनेवाली स्त्री की मनोव्यथा को यहां पर चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी में 'कमली' नाम की स्त्री गाँव में आये हुए सिद्ध पुरुष से मिलकर अपनी व्यथा बताकर उस व्यथा को मिटाना चाहती है। पर उसके जाने से पहले ही उसका पति सिद्ध पुरुष के पास जाकर आता है , यह बात पति उसे बताता नहीं। कमली

पति के लिए बहुत कुछ करती है पर उसे कुछ पूछती नहीं। - "पकाएगी, खिलाएगी - सेवा करेगी ये - पर कभी भी इत्ता नहीं जान पायेगी कि, उसके मन में क्या है?[१०] कमली परिवार के लिए बहुत कष्ट करती है। पर दोनों एक दूसरे को समझ और जान न पाने के कारण अपनी समस्या एक दूसरे तक पहुंचाते नहीं। पति स्त्री होने के कारण उसे दुय्यम दर्जे पर ही रखता है और वह 'कमली ' खुद को स्त्री होने के कारण स्त्री को हर प्रकार का कष्ट झेलना ही पड़ता है, ऐसी धारणा रखकर घुटन भरी जिंदगी जीती है।

'यानि कि एक बात थी' इस कहानी द्वारा मृणाल पाण्डे जी ने स्त्री के अस्तित्व की महत्ता स्पष्ट करने वाली एक सफल स्त्रीवादी कहानी प्रस्तुत की। प्रस्तुत कहानी की नायिका एक प्राध्यापिका है जो अपने पति से कुछ वर्षों बाद अलग रहने लगती है। वह समाज के बनाये हुए व्यवस्था में खुद को विलीन कर किसी की बनकर रहना नहीं चाहती। वह अपनी अलग पहचान बनाए रखकर उसके साथ साझा चाहती है, पर वह संभव न होने से वह अलग हो गई थी। पुरुष, स्त्री की आंतरिकता को पहचानता नहीं था । वह स्वयं को बडा बनाकर स्त्री को छोटा सिध्द करना चाहता है। वह चाहता है "चित भी उसकी, पट भी उसकी और अष्टा उसके बाप के बाप का"[११] इससे स्पष्ट है कि पुरुष स्त्री को उसका स्वतंत्र अस्तित्व न मानते हुए उसपर अपना वर्चस्व सिद्ध करना चाहता है। पर वह स्त्री खुद का अलग रास्ता चुनती है।

इस बात से यही स्पष्ट करना है कि, स्त्री अस्मिता का मुख्य हेतू पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की जो बरसों से रुढ हो चुकी मानसिकता को खत्म कर एक स्वतंत्र विचारधारा को प्रतिष्ठित करना है। जिसमें स्त्री के खुद के अस्तित्व की बात कही जा सके और साथ ही साथ उसे समानता का अधिकार प्राप्त हो सके।

मृणाल पाण्डे 'स्त्री मुक्ति' संबंधित अपनी बात रखते हुए कहते हैं - "नारीवाद पुरुषों का नहीं उनकी मानवीयता घटाने वाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार करता रहा है। जो मर्दानगी के नाम पर गढ़ा गया है और जिसके पीछे झूठी अहम्मन्यता और उत्पीड़क प्रवृति के अलावा कुछ नहीं है।"[१२]

इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री पुरुष से मुक्ति की कामना नहीं करती बल्कि समाज में जो पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण विचारधारा है उससे मुक्ति चाहती है। इस प्रकार अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा स्त्रियों के अनेक प्रश्नों, समस्याओं तथा उसके अस्तित्व की छवि को अभिव्यक्त किया हुआ दिखाई देता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श स्त्रियों की समस्याओं का उनकी भावनाओं को, उनकी व्यथाओं तथा उनके व्यक्तित्व और अस्तित्व का चित्रण तो करता ही है । साथ ही साथ यह एक परिवर्तनशीलता की ओर जाने की सोच को भी प्रस्तुत करता है, जो समाज में स्त्रियों की स्थिति को सुधारने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास में सहायक सिद्ध होता है। साहित्य के माध्यम से ही संपूर्ण समाज के सामने यह प्रस्तुत होता है कि, स्त्री सिर्फ पराश्रित पात्र के रूप में नहीं बल्कि एक स्वतंत्र और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में भी अपना अस्तित्व सिद्ध करने में सक्षम है। इसीलिए ऐसा कहना सही लगता है कि, समकालीन हिंदी साहित्य स्त्रियों के अस्तित्व, स्त्रियों की पहचान, उनके अधिकार, उनकी सामाजिक भूमिका को अधिक प्रभावशाली तथा सशक्त रूप में अभिव्यक्त करके अपना एक अलग महत्व रखता है।

संदर्भ सूची

1. सम्पा. डॉ भोलानाथ तिवारी, हिंदी पर्यायवाची कोश, पृ. ५७२
2. सम्पा. रामचंद्र वर्मा, मनिक हिंदी कोश, पृ. ७७
3. प्रभा खेतान, हंस पत्रिका, अक्टूबर - १९९६, पृ. ७६
4. क्षमा शर्मा, स्त्रीत्व विमर्श : समाज व साहित्य, ३६
5. डॉ. मनोहर नलावडे, मेहरुन्निसा परवेज का कथा साहित्य, पृ. ३४
6. मैत्रेयी पुष्पा, तुम किसकी हो बिन्नी?, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, पृ. ४३
7. भारत्वाज हेतु, पंचशील शोध समीक्षा, पृ. ११५
8. भीष्म साहनी, 'पिकनिक', वाङ्चू कहानी संग्रह से, पृ.४९ - ५०
9. आजकल, पृष्ट-२९
10. राजी सेठ, दूसरे देशकाल में, पृ. ५१
11. मृणाल पांडे, एक नीच ट्रेजेडी, पृ. ४२
12. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, पृ. ९